IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

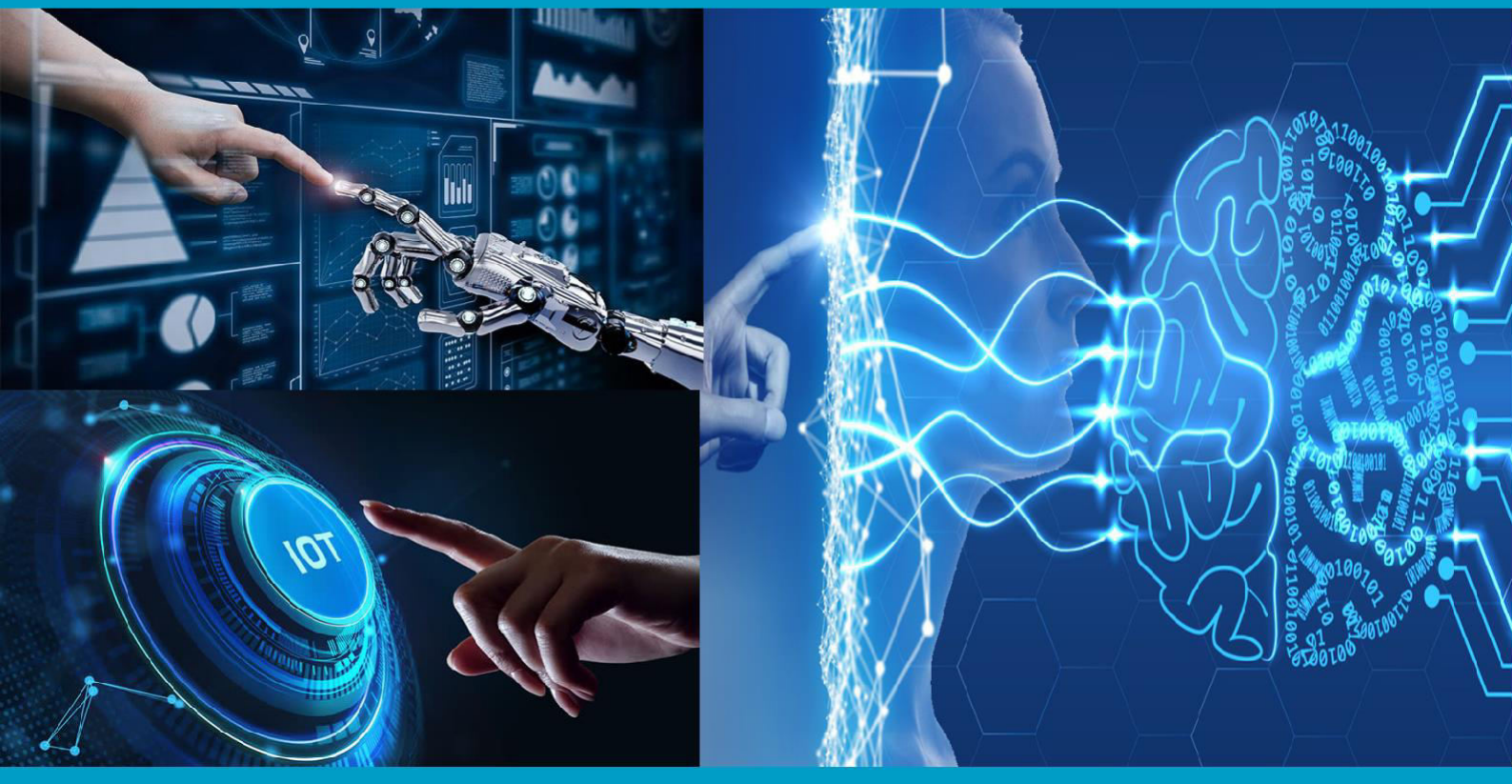

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

प्राचीन भारत में सैन्य एवं आयुध व्यवस्था

Amit Kumar, Dr. Yash Kumar

Scholar, Govind Guru Tribal University, Banswara (Raj.), India

Assistant Professor in History Department, New Look Girls P.G. College, Lodha, Banswara (Raj.), India

शोध सार

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता हैं, उसके लिए साहित्यिक साधन, पुरातात्विक साधन और विदेशियों के वर्णन सभी का महत्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम उपलब्ध है।

सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य का सुरक्षात्मक विकास प्रारम्भ हुआ। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारकों की तरह सैन्य कारक भी सभ्यता के उत्थान और पतन में महत्वपूर्ण व निर्णायक भूमिका निभाता हैं। सैन्य इतिहास ऐतिहासिक अध्ययन की लोकप्रिय शाखा है जिसमें युद्धकाल के साथ-साथ शान्ति काल में भी सेना के सभी रूपों यथा थल सेना, नौ सेना व वायु सेना की समस्त गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।

मनुष्य के स्वय, परिवार एवं कालान्तर में राष्ट्र की रक्षा के लिए सैन्य संगठन की आवश्यकता महसूस हुई। इसी के साथ मानव इतिहास में सेना की प्रथम नींव रखी गई और हथियारों का निर्माण प्रारम्भ हुआ।

मूल शब्द - राजनीतिक, सामाजिक, सैन्य, सुरक्षात्मक, आयुध।

परिचय - विचारणीय प्रश्न यह है कि मनुष्य ने स्वयं की सुरक्षा एवं हथियारों अथवा सुरक्षात्मक उपकरणों का निर्माण कब से आरम्भ किया? प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त होती है कि मनुष्य प्राक्-ऐतिहासिक काल से ही हथियारों का निर्माण कर रहा था। यह हथियार स्वयं की रक्षा एवं शिकार करने के लिए उपयोग में लाये जाते थे। दल अथवा झुण्ड में रहने के बाद परिवार एवं कुटुम्ब की रक्षा हेतु भी हथियारों का निर्माण बड़े पैमाने पर हुआ। हालांकि सेना का गठन अभी तक प्रारम्भ नहीं हुआ था। सम्भवत् प्राक्-ऐतिहासिक काल में दल की सुरक्षा का दायित्व, दल में रहने वाले सभी मनुष्यों का था। धीरे-धीरे राष्ट्रों का निर्माण होने लगा और सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर सैनिकों की आवश्यकता हुई। सम्भवतः इसी कारण से सैन्य संगठन अस्तित्व में आया। प्राचीन काल में विश्व में सेना एवं युद्ध विकास यहीं से प्रारम्भ हुआ था। भारत में भी सैन्य परम्परा का यही स्वरूप उभर कर सामने आता है।

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक हड़प्पा सभ्यता के नगरों मोहनजोदड़ो तथा अन्य स्थानों से नगर की चारदिवारी एवम् चौकीदारों के घरों के साक्ष्य प्राप्त हुए है। इससे सिद्ध होता है कि विकास के प्रारम्भिक चरण में भी मनुष्य सुरक्षा के प्रति पूर्णतया सजग था। हड़प्पा सभ्यता की लिपि के न पढ़े जाने के कारण इस समय की सैन्य व्यवस्था के बारे में अभी तक पूर्णतया जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है। हड़प्पा संस्कृति के विनाश के कारणों में एक संभावित कारण आर्यों का आक्रमण भी माना जाता है। आर्यों के आगमन के साथ ही वैदिक काल की शुरूआत भी मानी जाती है। वैदिक काल के इतिहास की जानकारी के लिए केवल साहित्यिक सामग्री ही उपलब्ध है।

इन साहित्यिक स्त्रोतों का प्रमुख विषय धर्म एवम् दर्शन ही हैं। परन्तु प्रसंगवश इनमें सैन्य सूचनाएँ भी प्राप्त होती है। ऋग्वेद वैदिक साहित्य में प्रथम स्त्रोत है जिससे भारतीय आर्यों के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त होती है। ऋग्वेद के सातवें मण्डल से तात्कालिक प्रसिद्ध दसराज्ञ युद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। यह युद्ध पुरुएणी नदी के किनारे लड़ा गया था। ऋग्वेद के श्लोकों से इस युद्ध के कारणों, घटनाओं, तात्कालीन राजनीति, कूटनीतिक सम्बन्धों, युद्ध कौशल तथा रणनीति, व्यूह रचना इत्यादि की विस्तृत सूचना प्राप्त होती है।

वैदिक कालीन ग्रंथ यजुर्वेद के उपवेद धनुर्वेद में धनुष-बाण एवम् अन्य अस्त्र-शस्त्रों के विषय में तथा उनके उपयोग से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। विष्णु पुराण में धनुर्वेद को ज्ञान की 18 शाखाओं में से एक बताया गया है। विचारणीय यह है कि भारतीय आर्यों ने भारत में जो युद्ध लड़े, वो आक्रामक नहीं थे, अपितु तात्कालिक परिस्थितियों के लिए आवश्यक थे।

ऋग्वैदिक काल में युद्ध प्रायः आर्यों एवम् अनार्यों के मध्य तथा दो आर्य कबीलों के मध्य हुआ करते थे। इन्द्र को युद्ध का देवता माना गया। इसे युद्ध में शत्रु का नाशक एवम् वज्र धारण करने वाला बताया गया है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के श्लोकों से तात्कालिक कूटनीति सन्धियाँ, रणनीति सैन्य दल, यूर्ग इत्यादि की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। एक अन्य महत्वपूर्ण सूचना यह ज्ञात होती है कि युद्ध में पराजित अनार्यों को दास बनाया जाता था। सम्भवतः भारतीय इतिहास में दास प्रथा का यह प्रथम उदाहरण है।

उत्तर वैदिक काल तक आते-आते जब कबिलों का अस्तित्व समाप्त हो गया था, तब उनके स्थान पर विशाल राज्यों का निर्माण हुआ। इस समय 'सार्वभौम' एवम् अधिराज्य के स्वरूप में राज्यों का विस्तार होने लगा था। उत्तर वैदिक काल में कुरू, पांचाल, कोशल, काशी, विदेह आदि प्रमुख राज्य थे। स्वाभाविक है कि विशाल राज्यों के लिए विशाल एवम् सुदृढ़ सेना की भी आवश्यकता हुई। ब्राह्मण में राजा की उत्पत्ति का कारण सैनिक आवश्यकता को बताया गया है। इस समय की विशेषता रही कि राजा अपनी शक्ति एवम् सैन्य दृढ़ता का प्रदर्शन करने के लिए वाजपेय, राजसूय' व 'अश्वमेघ' यज्ञों के अनुष्ठान का आयोजन करते थे। यजुर्वेद संहिता तथा ब्राह्मण ग्रंथी में राजा के उच्चाधिकारियों में सेनानी (सेनापति) की सूचना प्राप्त होती है, जो युद्ध में सेना का संचालन करता था। हालांकि युद्ध में मुख्य नेतृत्वकर्ता प्रायः राजा ही होता था।
वेदोत्तर काल में महाकाव्यों रामायण व महाभारत और सूत्रों एवम् धर्मशास्त्रों से तात्कालीन सैन्य व्यवस्था तथा युद्धों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। महाकाव्यों का समय निर्धारण विभिन्न विद्वानों ने भिन्न- भिन्न बताया है। परन्तु स्मरणीय तथ्य यह है कि महाकाव्यों में प्रदत्त राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवम् सैन्य तथ्य वेदों से भिन्नता लिए हुए है। साथ ही महाकाव्यों में कालक्रम में भी भिन्नता है। किन्तु महाकाव्यों में तात्कालिक सैन्य व्यवस्था एवम् संगठन की अत्यधिक जानकारी प्राप्त होती है।

रामायण में श्रीराम और रावण के बीच युद्ध दिखाया है, वहीं महाभारत में कौरवों एवम् पाण्डों के मध्य महाभारत का युद्ध दर्शाया गया है। दोनों ही महाकाव्यों से तात्कालिक कूटनीति, राजनीति, संधियों, सैन्य व्यवस्था, संगठन, रणनीति, व्यूह रचना, हथियार इत्यादि के विषय में महत्वपूर्ण सूचना मिलती है। महाकाव्यों तथा पुराणों के समालोचनात्मक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस समय में प्रचलित सैन्य व्यवस्था के आधार पर ही मध्यकाल तक भारत में हिन्दू सैन्य व्यवस्था स्थापित रही। केवल समय और परिस्थितियों के अनुरूप ही उसमें परिवर्तन तथा विकास सम्भव हुए। परन्तु युद्ध को नीति तथा नियम पुरातन ही रहे। पुराणों में अस्त्र-शस्त्रों, युद्ध पद्धति इत्यादि की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। हाँलाकि पुराणों की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा होता है।

बौद्ध और जैन साहित्यिक स्त्रोतों ने छठी शताब्दी ई. पू. में सोलह शक्तिशाली राज्यों के अस्तित्व को दर्शाया है, जिन्हें षोडग महाजनपद कहते थे। महाजनपदों में आपसी युद्ध तथा सैन्य गतिविधियों के संचालन के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इससे ज्ञात होता है कि राज्य का आकार एवम् शक्ति में वृद्धि होने के साथ-साथ सैन्य व्यवस्था में भी वृद्धि एवम विकास हुआ। महाजनपदों में मगध अपनी शक्तिशाली सेना तथा कूटनीति से सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में अभ्युदित हुआ। राज्य के नंद वंश के समय में सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ।
युनानी इतिहासकार एरियन ने इस आक्रमण का वर्णन करते हुए ही युनानी एवम् भारतीय सैन्य व्यवस्था और सेना के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान की है।

नन्दों के पश्चात मगध में मौर्य वंश की स्थापना हुई जिसके अन्तर्गत पूरे भारत में एकछत्र स्थापित हुआ। मौर्य वंश के इतिहास एवम् सैनिक संगठन की सूचना कौटिल्य की अर्थशास्त्र, मैगस्थानीज की इण्डिका इत्यादि से प्राप्त होती है। इण्डिका अपने मूल रूप मे उपलब्ध नहीं है बल्कि स्ट्रैबो, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन प्लूटार्क जस्टिन इत्यादि लेखको के ग्रंथों में इण्डिका के उद्धरण प्राप्त होते है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र का मूल विषय राजनीति है परन्तु कोटिल्य ने राज्य के प्रव्येक विभाग जिसमे सैन्य विभाग भी था, का अलग वर्णन किया है।
मौर्य वंश के बाद शुंग, कण्व, सातवाहन, चेदि आदि वंशो ने भारत के विभिन्न भागों पर राज्य किया। इसके अतिरिक्त विदेशी आक्रमण भी हुए जिसमें हिन्द-यवन, शक, कुषाण इत्यादि थे। इन आक्रमणों के साथ ही भारतीय सैन्य संगठन में भी परिवर्तन हुए। इन आक्रमणों के सफल होने की पीछे एक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि उस समय भारत मे छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य नहीं थे। इसलिए इन आक्रमणों का सामना करने के लिए कोई सुचारू सैन्य व्यवस्था नहीं थी। हांलाकि यवन अथवा शक आक्रमणकारियों की सैन्य प्रणाली संख्या एवम् रणनीति के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है, परन्तु भारतीय राजाओं की पराजय का अर्थ यही था कि मौर्य वंश के पश्चात् भारतीय सैन्य संगठन सुदृढ़ नहीं रहा था।

यह दृढ़ता गुप्त वंश की स्थापना के पश्चात् पुनः स्थापित हुई। यवनों के आक्रमणों तथा गुप्त वंश की स्थापना के मध्य मौर्य सैन्य प्रणाली से निरन्तर परिवर्तन तथा विकास जारी थे। चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने गुप्त साम्राज्य को भारत की सुदृढ़ केन्द्रीय शक्ति के रूप में स्थापित किया। हालांकि गुप्त साम्राज्य की सैनिक शक्ति लगभग मौर्य वंश की सैन्य प्रणाली पर ही आधारित थी। परन्तु सैन्य संगठन के सन्दर्भ में सर्वप्रथम सामन्तवाद के लक्षण दृष्टव्य हुए, जो सैन्य संगठन में भी मौजूद थे।

यद्यपि भारत में सामंतवाद के अस्तित्व पर विवाद हैं, तथापि आर.एस. शर्मा के अनुसार भारत में सामंतवाद अस्तित्व में था तथा इसकी दो विशेषतया दृष्टव्य होती है यथा, जमीनदारों का वर्ग और कृषक समाज। कृषि समाज में दोनों की प्रधान भूमिका थी। राज्यों का कर एकत्रीकरण सामंतो के कारण ही संभव हो पाया और इस कारण समाज में अनेक शक्ति केन्द्रों यथा, पुजारी, मठ, मंदिर, अग्रहार इत्यादि का उद्भव हुआ।

प्राचीन भारत में युद्ध-विज्ञान का विकास बहुत अधिक हुआ था और विविध आयुधों का आविष्कार हो गया था।
वैदिक युग में प्रमुख आयुध इस प्रकार थे-धनुष-बाण, ऋष्टि, अंकुश, शतघ्नी, परशु, कृपाण, वज्र' आदि। कवच और शिरस्त्राण का प्रयोग आत्मरक्षा के लिए आयुधों का उल्लेख है। इसमें धनुष-बाण, गदा, खड्ग, तोमर, किया जाता था। रामायण में अधिक विकसित शक्ति, पट्टिश आदि का उल्लेख मिलता है। शब्द-भेदी बाणों का, दिव्यास्त्रों, ब्रह्मास्त्र आदि का वर्णन है। दशरथ ने शब्दभेदी बाण का प्रयाग किया था विश्वामित्र ने राम को अनेक दिव्य आयुधों जृम्भकास्त्र आदि की शिक्षा दी थी। रामायण-काल में प्रकृति में उपलब्ध पदार्थों-पाषाण-शिलाओं, वृक्ष के तनों आदि का भी आयुधों के रूप में प्रयोग है। शरीर के अंगों का भी, जैसे- मुष्टि, चपेटिका, नखाघात, दन्त-प्रहार, पाद-प्रहार आदि का भी युद्धों में प्रयोग किया जाता था।
महाभारत में युद्ध विज्ञान और अधिक विकसित हुआ। अनेकविध आयुधों का निर्माण किया गया था। उद्योग पर्व में अनेक आयुधों का वर्णन आता है। सामान्य आयुधों के अतिरिक्त दिव्य अस्त्रों-मोहनास्त्र, वरूणास्त्र, अग्न्यस्त्र, पाशुपतास्त्र, ब्रह्मास्त्र आदि से शत्रुओं को पराजित किया जाता था। पृथ्वी को भेदकर जल की धारा को प्रवाहित करने वालो बाणों का प्रयोग विदित था।

अर्थशास्त्र, शक्रनीतिसार आदि ग्रन्थों में आयुधों का वैज्ञानिक विवेचन है। चाणक्य ने आयुधों को आठ वर्गों में विभाजित किया था-
स्थिरयन्त्र, चलयन्त्र, हलमुख, धनुष, बाण, खड्ग, क्षुरकल्प और आयुध। शुक्रनीति आयुधों को दो वर्गों में विभक्त करती है अस्त्र और शस्त्र। अस्त्र आयुध वे हैं, जिनका प्रहार शारीरिक शक्ति, मन्त्र, यन्त्र या अग्नि के बल से फेंककर किया जाता है। अस्त्र आयुध वे हैं, जिनका प्रहार शारीरिक शक्ति, मन्त्र, यन्त्र या अग्नि के बल से फेककर किया जाता है। शस्त्र आयुधों को हाथों में पकड़े-पकड़े ही शत्रु पर आघात किया जाता है। शुक्रनीति में बारूदी आयुधों अग्निचूर्ण और बन्दूक के वितरण दिये गये हैं। अग्निचूर्ण को बनोन की विधि इस प्रकार है- यवक्षार पांच पल, गन्धक एक पल और कोयले का चूर्ण एक पल। चौदहवीं शताब्दी के विजयनगर के अभिलेखों में बारूदी हथियारों का उल्लेख है।
प्राचीन समय में प्रयुक्त आयुधों वर्गों में विभक्त किया गया है-
1-दिव्य आयुध
2-धनुष-बाण
3- अस्त्र
4-शस्त्र
5-दण्ड आयुध
6- प्राकृति आयुध
7-यन्त्र आयुध
8- पाश
9 अन्य आयुध

दिव्य आयुध

प्राचीन साहित्य में अनेक दिव्य आयुधों का वर्णन है। इनमें विभिन्न देवताओं के अंश की कल्पना की गई थी। इनका प्रयोग सन्देहास्पद है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री संज्ञा का विवाह सूर्य से किया। पुत्री द्वारा पति की तेजस्विता को सहन न करने के कारण विश्वकर्मा ने सूर्य के तेजस्वी अंश को कुछ छीन दिया। इस अंश से विभिन्न देवताओं ने अपने शस्त्रों का निर्माण किया।
प्राचीन साहित्य में वर्णित कुछ दिव्य आयुधों का परिचय निम्न है-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

जृम्भक अस्त्र

जृम्भक अस्त्रों की शिक्षा विश्वामित्र ऋषि ने राम को दी थी। इनका संचालन रहस्यमय दिव्य मन्त्रों के उच्चारण से किया जाता था। ब्रह्मा आदि ऋषियों के तपः पुंज से ये अस्त्र अवतीर्ण हुए। विश्वामित्र के एक पूर्वज कृशाश्व ने तप द्वारा ब्रह्मा से इनको पाया। वंश-परम्परा से ये विश्वामित्र को प्राप्त हुए। जृम्भकास्त्रों का प्रभाव अनुपम था और कोई इनको रोक नहीं सकता था।

ब्रह्मास्त

दिव्य अस्त्रों में ब्रह्मास्त्र अतिशक्तिशाली था। विश्वमित्र ने इसको भी राम को दिया था। राम ने इसी से रावण का वध किया। कालिदास के अनुसार ब्रह्मास्त्र अमोघ था। यह भयानक फण उठाये शेषनाग के समान प्रतीत होता है। इसके फणों से निकलने वाली ज्वालायें गगन मण्डल में दस उल्काओं का निर्माण करती है।

आग्नेयास्त्र

इस अस्त्र का सम्बन्ध अग्नि देवता से माना गया है। इससे आकाश में अग्नि के कण बरसने लगते हैं। राम ने समुद्र को सुखाने के लिए इस अस्त्र को धनुष पर चढ़ाया था।

वारुणास्त्र

वारूणास्त्र को वरूण देवता का प्रतीक समझा गया था। इस अस्त्र के प्रयोग से मेघ उमड़कर तीव्र वर्षा करते हैं अग्नि को बुझा देते हैं।

वायव्यास्त्र

वायव्यास्त्र के सम्बन्ध वायु देवता से माना गया। इसके प्रयोग से तीव्र आंधियां चलती हैं। वायु के चलने से अग्नि की ज्वालायें और भी तीव्र हो जाती हैं।

ऐन्द्रास्त्र

ऐन्द्रास्त्र का सम्बन्ध इन्द्र देवता से रहा। इन्द्र के मन्त्र से बाण को अभिमन्त्रित करके इसे छोड़ते थे।

मायाहर अस्त्र

प्राचीन साहित्य में प्रसिद्ध है कि युद्धों में राक्षस अनेक प्रकार की माया (कपट-आचरण) करते थे। विश्वामित्र ने राम को मायाहर अस्त्र दिया था, जिसमें राक्षसी माया को नष्ट करने की सामर्थ्य थी।

तामिस्र अस्त्र

तामिस्र अस्त्र के प्रयोग से चारों ओर घना अंधेरा छा जाता था।

नारायणास्त्र

नारायण (विष्णु) के नाम से इस अस्त्र की रचना हुई थी। राम ने सुग्रीव के समक्ष अपने पराक्रम को प्रदर्शित करने के लिए नारायणास्त्र से सात ताण वृक्षों का छेदन किया था।

पाशुपतास्त्र

पाशुपतास्त्र का सम्बन्ध भगवान् शिव से था। शिव ने इस अस्त्र को अर्जुन को दिया था। यह अस्त्र अमोघ था। इससे प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित हो जाते थे।

अशनि (वज्र)

प्राचीन भारतीय साहित्य में अशनि को इन्द्र का विशेष आयुध कहा गया है। वैदिक साहित्य में इसका प्रचुर वर्णन हैं। "अर्थशास्त्र के अनुसार वज्र लोहे के डण्डे के रूप में था। दास महोदय का कथन है प्रारम्भिक युग में वज्र पत्थर का होता होगा, जो उत्तरवर्ती युग में हड्डियों का बनाया जाने लगा।" महाभारत में वज्र को आठ चक्रों वाला महान् भयानक आयुध कहा गया है। इसकी रचना महादेव ने की थी। रामायण में भी इस आयुध के प्रयोग का वर्णन हुआ है।

उत्तरवर्ती चित्रकला और शिल्प में अशनि के अनेक स्थानों पर दर्शन होते हैं। यह दो प्रकार का है। एक तो डण्डे के आकार का है, जो बीच में पतला तथा दोनों किनारों पर चौड़ा है। दूसरा दो मुख का है। इसमें दोनों ओर दो नुकीले दांत बने होते थे। इन्द्र के हाथ में वज्र का अंकन

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

प्राचीन मूर्तियों और चित्रों में हुआ है। बौद्ध देवी वज्रतारा की मूर्तियों में एक हाथ में वज्र का अंकन है। गौतम बुद्ध की एक मूर्ति के नीचे 10 वस्तुयें अंकित हैं, इनके ठीक बीच में वज्र है।

वज्र आयुध को अत्यधिक कठोर कहा गया है। कालिदास तथा अन्य कवियों के अनुसार यह कठोरता का उपमान है।

शक्ति

शक्ति का वर्णन दिव्य तथा सामान्य दोनों प्रकार के आयुधों के रूप में मिलता है। ब्रह्मा ने एक शक्ति रावण को दी थी। यह अति दैदीप्यमान और मंत्रों से अभिमन्त्रित थी।

शक्ति को दुर्गा और कार्तिकेय का आयुध माना गया है। प्राचीन शिल्प में कार्तिकेय के बायें हाथ में शक्ति का अंकन है। कहा गया है कि शक्ति आयुध को मय ने बनाया था। यह अमोघ थी और शत्रु के जीवनरूपी शोणित का पान करती थी। इसमें आठ घण्टियां लगी रहती थीं। चलते समय इसमें से चीत्कार निकलती थी और अग्नि की रेखा बनती जाती थी।

शक्ति का उल्लेख सामान्य मानव आयुध के रूप में भी है, इसको फेंककर वार किया जाता था। महाभारत के अनुसार यह लोहे की बनती थी। इसमें सोने की प्लेट तथा घण्टियां लगी रहती थीं। अर्थशास्त्र में शक्ति का परिगणन हलायुधों में हुआ है। यह करवीर के पत्ते के आकार की होती थी। यह चार हाथ लम्बा धातुमय आयुध था तथा गोस्तनाकार मूठ होती थी।

धनुष-बाण

प्राचीन भारतीय आयुधों में धनुष-बाण का प्रमुख स्थान था। आयुधों में धनुष की प्रधानता होने के कारण इस विद्या को धनुर्वेद कहा गया है।

धनुष की रचना लम्बे लचीले दण्ड से की जाती थी। यह प्रायः बांस से बना होता था। इसके दोनों किनारों को कोटि या अटनी कहते हैं। डोरी (ज्या) की लम्बाई दण्ड से कुछ छोटी होती है। दण्ड को झुकाकर दोनों किनारों को डोरी से बांध देते हैं। इस प्रकार दण्ड कुछ गोलाकार और डोरी सीधी रहती है। धनुष पर बाण का सन्धान करके डोरी और डण्डी को विपरीत दिशाओं में खींचकर डोरी को छोड़ देने से उसके सामर्थ्य से बाण दूर तक चला जाता है। इस प्रक्रिया में डोरी में उच्च टंकार-ध्वनि होती है।

बांस के अतिरिक्त धनुर्दण्ड की रचना अन्य पदार्थों से भी होती थी। मुख्यतः चार प्रकार के पदार्थ थे- ताल, कांप (एक विशेष प्रकार का बांस), दारू और श्रृंग। इसी आधार पर धनुष के चार नाम हुए कार्मुक, कोदण्ड, दूण और धुनः। डोरी भी विभिन्न पदार्थों से बनाई जाती थी, यथा-मूर्वा, अर्क, शण, गवेधु, वेणु अथवा स्नायु।

बाण भी अनेक पदार्थों से बनते थे। इनमें सर्वाधिक प्रचलित शर (सरकण्डा) था। सरकाण्डों की मजबूत डण्डी, बैत और नरकट का प्रयोग होता था। बाण के एक सिरे पर लोहे की नोक या तेज की गई हड्डी की नोक लगाई जाती थी। तीव्र वेग से छोड़े जाने पर यह लक्ष्य के शरीर में घुस जाती थी। शर के दूसरे सिरे पर किसी पक्षी के, विशेष रूप से कंक पक्षी के पंख लगाये जाते थे। इससे बाण की गति त्वरित हो जाती थी।

बाणों के अनेक नाम प्राचीन साहित्य में लिखित हैं, यथा-बाण, शिखि, शिलीमुख, काण्ड, नाराच, क्षुरप्र, शर, भेदिक आदि।

सरकण्डे की डण्डी से बनने के कारण इसे शर और बाण कहा गया था। नरकट आदि गांठदार डण्डियों से बनाये जाने से यह काण्ड या नाराच कहा गया। नोकदार होने से यह शिखि और शिलीमुख हुआ।

बाणों की नोकें अनेक प्रकार की हो सकती थीं सीधी, शूलाकार, अर्धचन्द्राकार, पक्षी की चोंच के समान, आदि। छुरे के समान नोंक वाला बाण क्षुरप्र था। शुक्र का कथन है कि क्षुरप्र की लम्बाई नाभि तक होती है तथा इसमें से चन्द्रमा के समान लाभ विकरित होती है। कवच का भी भेदन करने से समर्थ बाण भेदिक था।

प्राचीन साहित्य में ऐसे बाणों का भी वर्णन है, जो प्रहार किये जाने पर पुनः धनुर्धारी के पास वापस आ जाते थे। राम ने जिस बाण से सात ताल वृक्षों का भेदन किया, वह उनके पास वापस आ गया।

अस्त्र

अस्त्र आयुध वे हैं, जिनकों फेंककर शत्रु पर आघात किया जाता है। प्रमुख अस्त्र निम्न थे-

शक्ति, चक्र, भिन्दिपाल, कुन्त, त्रिशूल, तोमर, प्रास, शंकु, असिधेनुका आदि।

शक्ति: शक्ति की दिव्य आयुधों में वर्णन किया जा चुका है। यह लोक में भी वर्णित है। रामायण और महाभारत में शक्ति के प्रयोग के वर्णन मिलते हैं। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

चक्र

भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार विष्णु भगवान् का प्रधान आयुध चक्र था, जिसका नाम सुदर्शनचक्र था। विष्णु के अवतारूप कृष्ण का भी यह आयुध रहा। भारतीय कलाओं में इसका अंकन हुआ है। यह विकसित कमल के समान है। इसकी पंखुड़िया आरे के समान कार्य करती हैं।

भिन्दिपाल

यह भारी आयुध एक गोले के रूप में था। इसका आकार गोफी या गुलेल का-सा होता थां भिन्दिपाल का कार्य था- दाहकता उत्पन्न करना, तोड़-फोड़ करना, काटना और आघात करना। मत्स्य पुराण के अनुसार यह अस्त्र लोहे का होता है तथा इसको फेंककर मारा जाता है। चाणक्य ने भिन्दिपाल की गणना हलमुख आयुधों में की है। गणपति शास्त्री ने बड़े फने वाले कुन्त को ही भिन्दिपाल बताया है।

कुन्त और प्रास

ये वर्तमान भाले के समान थे। कुन्त कुछ बड़ा तथा प्रास छोटा था। इसमें पीछे बांस की लम्बी डण्डी और आगे तीक्ष्ण नोकदार फलक होता था। आमने-सामने के युद्ध में इसको फेंककर मारा जाता था।

कौटिल्य ने कुन्त और प्रास की गणना आयुधों में की है। अर्थशास्त्र की टीका में गणपति शास्त्री ने तीन प्रकार के कुन्त बताये हैं उत्तम कुन्त सात हाथ लम्बा, मध्यम कुन्त छः हाथ लम्बा और कनिष्ठ कुन्त पांच हाथ लम्बा होता है।

तोमर

तोमर भी कुन्त के समान है, परन्तु उससे कुछ छोटा है। इस प्रकार प्रहार भी फैककर किया जाता है।

त्रिशूल

त्रिशूल भी भाले के आधार का होता है, परन्तु इसमें आगे तीन नोकें होती हैं। यह भगवान शिव का प्रधान आयुध था। चाणक्य ने त्रिशूल की गणना चलयन्त्रों में की है

शंकु

ये छोटे आकार के, आगे से नुकीले अस्त्र थे। सैनिकों के पास अनेक शंकु होते थे। एक-एक शंकु को निकालकर वे शत्रु पर फेंकते रहते थे।

असिधेनका

यह छोटे आकार का आयुध (छुरी) आगे से तेज नोकदार था। इसको शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका और असिधेनुका नाम दिये गये थे।

शस्त्र

शस्त्रों को हाथ में पकड़कर, बिना फेके उपयोग में लाया जाता था। प्रसिद्ध शस्त्र थे- परशु, कुठार, हलमुख, करवाल, खड़ग निर्त्रिंश, चन्द्रहास, कृपाण, कौक्षेयक, असि, अनिपत्र आदि। शस्त्रों में परशु का बहुधा उल्लेख है। अर्थशास्त्र में इसकी गणना क्षुरकल्प आयुधों में है। यह लकड़ी काटने वाले कुल्हाड़े के समान होता है। गणपति शास्त्री ने इसको 24 अंगुल का सम्पूर्ण लोहे का बना कहा है। कुठार भी परशु जैसा, किन्तु उससे भारी होता है।

प्राचीन साहित्य में परशुराम का प्रधान आयुध परशु था। यह उनको अपने गुरु शिव से पारितोषिक रूप से प्राप्त हुआ था। शिव के अनेक प्राचीन शिल्पों में आयुध के रूप में परशु का अंकन है।

हलमुख में हल के समान आगे को मुड़ी हुई नोक होती थी। यह बलराम का प्रिय आयुध था। करवाल, खड्ड्ग, निस्त्रिंश, चन्द्रहास, कृपाण, कौक्षेयक, असि और असपित्र छोटी-बड़ी विभिन्न आकार की तलवारें थे। इसके फलक विशुद्ध फौलाद के नीले रंग के होते थे। तेज धार एक ओर या दोनों ओर हो सकती थी। आगे से ये नोकदार या गोलाई लिये होते थे। धार सीधी या गोलाई लिये हो सकती थी। भगवतशरण उपाध्याय ने असि को लम्बी तलवार और खड्ग को छोटो तलवार कहा।

विभिन्न प्रकार की तलवारों को सुरक्षित रखने के लिए आवरणकोष (म्यान) होती थी। तलवारों को कमर के एक पार्श्व में बांधा जाता था। अतः इनको कोक्षेयक कहा गया।

दण्ड आयुध

दण्ड आयुधों में तेज धार नही होती। अग्रभाग मोटा होता है। इसके प्रहार से शत्रु के अंगों को तोड़ा जा सकता है। आघात के हलके या गम्भीर होने के हेतु है-प्रहारकर्त्ता की शक्ति, आयुध का भार और कठोरता। प्रमुख दण्ड आयुध थे- गदा, मुद्गर, मूसल, पट्टिश, दण्ड आदि।

गदा लोहे का एक मोटा डण्डा था, जिसके सिरे पर लोहे का मोटा गोला होता था। डण्डे को हाथों में पकड़कर आघात करते थे। भीम का यह प्रिय आयुध था। भारतीय शिल्प में गदा अनेक स्थानों पर वर्णित है। विष्णु का भी यह प्रिय आयुध था उनके एक हाथ में गदा का अंकन है। कुबेर देवता का आयुध भी गदा था।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

मुद्गर हथौड़े के आकार का आयुध था। अर्थशास्त्र में गदा और मुद्गर की गणना चलयन्त्रों में है। मूसल लोहे का बना मोटा तथा छोटा डण्डा था। इसका प्रहार शत्रु के अंगों का चूर्ण कर देता था। यह बलराम का प्रिय आयुध था।

पट्टिश लोहे का लम्बा चपटा डण्डा था। गणपति शास्त्री के अनुसार इसके दोनों सिरों पर त्रिशूल अंकित होता था। दण्ड आयुध आधुनिक लाठी ही था। यह मजबूत बांस का बनता था तथा सिरे पर धातु का खोल चढ़ाया जाता था। यम का आयुध दण्ड था। कुछ समालोचकों ने दण्ड को गदा के समान आयुध माना है।

प्राकृतिक आयुध

प्रकृति में स्वयं उपलब्ध आयुध इस वर्ग में हैं। ये दो प्रकार के हो सकते हैं- योद्धा के स्वयं के अंग और प्रकृति में अनायास सुलभ साधन।

योद्धाओं के स्वयं शरीर के अंग-हाथ, पैर, चपेटिका, मुष्टि, दन्त, नख आदि ही आयुध थे। इनसे योद्धा प्रहार करते थे और रक्षा करते थे। राम-रावण युद्ध में वानरों ने मुख्यतः इन्हीं का प्रयोग किया।

युद्ध-स्थल के समीप विद्यमान पाषाण, वृक्ष आदि भी आयुध हो जाते थे। राम-रावण युद्ध में इनका प्रचुर उपयोग हुआ था। वृक्षों को उखाड़कर, पर्वतों के शिखर तोड़कर और शिलाओं को उठाकर आयुधों के रूप में प्रयोग किया गया।

यन्त्र आयुध

प्राचीन आयुधों में यन्त्र आयुधों का वर्णन है। इसकी सहायतासे सुदूर स्थित शत्रुओं पर प्रहार किया जा सकता था। चाणक्य ने यन्त्र- आयुध वर्ग में यन्त्रपाषाण, गोष्पदपाषाण, मुष्टिपाषाण, रोचनी और दृषद् आयुध गिनाये है। इनसे विभिन्न आकार के पत्थर शत्रुओं में फेंके जा सकते थे।

प्राचीन साहित्य में तीन प्रकार के यन्त्र आयुधों का विशेष उल्लेख है- यन्त्र, भुशुण्डी और शतघ्नी। यन्त्र आयुध धातु का बनता था। इसके द्वारा पत्थर लोह-गोलक आदि से सुदूरस्थ शत्रु पर प्रहार किया जा सकता था।

शतघ्नी का उल्लेख रामायण और महाभारत में हुआ है। लंका के द्वारों पर राक्षसों द्वारा सैकड़ों शतघ्नियां सजाई गई थी। महाभारत युद्ध में शतघ्नियों का प्रचुर संख्या में उपयोग हुआ था। घटोत्कच के पास एक शतघ्नी थी, जो चार पहियों पर चलती थी और एक-साथ चार घोड़ों को मार सकती थी।

पाश

पाश एक विशेष प्रकार की रस्सी थी, जिसको विशेष विधि से फेंक कर शत्रु को बांधा जा सकता था। ऋग्वेद में पाश को वरूण और सोम का आयुध कहा गया है। पौराणिक साहित्य के अनुसार यह वरूण का विशेष आयुध है। अग्निपुराण में वर्णन है कि पाश दस हाथ लम्बा होता है तथा इसके किनारो पर फन्दे होते हैं। इनको सन, जूट, मूंज, तांत, चमड़ा अथवा मजबूत धागों से बनाते हैं। प्रयोग करते समय इसको हाथ के सामने की ओर रखते हैं। शुक्रनीति के अनुसार पाश को तीन हाथ लम्बा, डण्डे के आकार का बनाया जाता है। इसमें लोहे के तीन नुकीले दान्ते तथा लोहे की रस्सी लगी रहती है। प्राचीन पाश का विकास सम्भवतः इसी रूप में हुआ था।

अन्य आयुध

प्राचीन समय में आयुधों के रूप में अनेक अन्य इस प्रकार के पदार्थ हैं, जिनका परिगणन ऊपर के वर्गो नहीं हो सकता। आक्रमणकारी सेना को रोकने के लिए खौलती हुई मज्जा, तेल, चर्बी आदि द्रव्यों, लाख-राल जैसे प्रज्वलनशील पदार्थों एवं जलते हुए क्षमिक, सन, कपास, पट्टसूत्र, तसर आदि वस्त्रों का प्रयोग भी होता था।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से आधुनिक काल की भारतीय सैन्य परम्परा का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि सैन्य प्रणाली का संगठन सभी कालों में मूलभूत रूप से लगभग समान ही रहा है। सेना के विभिन्न अंगों में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देते हैं। केवल समय व परिस्थितियों के अनुसार उनकी उपयोगिता में कमी अथवा वृद्धि होती रही है यथा- ऋग्वैदिक काल की हस्ति सेना गुप्तकाल तक उतनी महत्वपूर्ण नहीं रहती, जबकि आरम्भिक सल्तनतकाल में पुनः होती है।

इसी प्रकार गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था अपने परिवर्तित रूप में पुनः संगठित होती है। इसी प्रकार गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था अपने परिवर्तित रूप में ब्रिटिश काल में भी इम्पीरियल सर्विस ट्रप्स के यप में दृष्टिगोचर होती है। गुप्तकाल में सामन्तवाद, सल्तनतकाल में इकतेदारी, मुगलकाल में मनसबदारी व ब्रिटिश काल में देशी सैन्य टुकड़ियाँ आरम्भिक सामन्तवाद के ही विभिन्न रूप है। इसके अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्रों में भी निरन्तर विकास एवं परिवर्तन होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

1. मजूमदार, बी. के., द मिलिट्री सिस्टम इन एनसीएण्ट इंडिया, द वर्ल्ड प्रेस लिमिटेड, कलकत्ता, 1955
2. त्रिपाठी, रामाशंकर, प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1971
3. विष्णु पुराण, सम्पादक श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली, 1967
4. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, युनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2003
5. सक्सेना, आर. के., मुगल शासन प्रणाली, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1989
6. हूँ वाज शुद्रास, डॉ. भीमराव अम्बेडकर
7. ऋग्वेद 5/57/2, 6/75/17
8. तत्रैव 5/52/6, 5/57/2 एवं 6
9. तत्रैव 81-17/10, 10/44/9
10. तैत्तिरीय संहित, 1/5/7/6
11. ऋग्वेद, 10/28/8
12. तत्रैव, 10/22/10
13. तत्रैव, 10/48/3, 10/113/5
14. अर्थशास्त्र के आयुधागाराध्यक्ष के अध्याय में आयुधों का विशद वर्णन है
15. धर्मशास्त्र का इतिहास, दूसरा भाग, पृ० 686
16. विष्णुपुराण
17. उत्तररामचरित 6.15 महावीरचरित 1.42
18. अर्थशास्त्र अधिकरण 2. अध्याय 18
19. शक्तिवृक्षायुधांश्चैव पट्टिशाशनिधारिणः। रामायण, सुन्दरकाण्ड 4.21
20. दी डेवलेपमेंट ऑफ आइकोनोग्राफी पृ० 330
21. जैन मिनिएचर पेन्टिग्स फ्रॉम वेस्टर्न इण्डिया, चित्र संख्या 60,61,62,69,72
22. दी आइकोनोग्रामी ऑफ बुद्धिस्टिक एण्ड ब्राह्मेनिकल कल्चर्स इन दी काका म्यूजियम, पृ० 49
23. दॉ आइकोनोग्राफी ऑफ बुद्धिस्टिक एण्ड ब्राहमेनिकल स्कल्पचर्स इन दी ढाका म्यूजियम, पृ० 147
24. अर्थशास्त्र अधिकरण 2 अध्याय 18
25. अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 18
26. हिन्दू इकोनोग्राफी, पृ० 147
27. अर्थशास्त्र, अधिकरण 2 अध्याय 18
28. हिन्दु आइकोनोग्राफी, पृ० 330
29. कालिदास का भारत, भाग 2, पृ० 265
30. कालिदास का भारत, भाग 2, पृ० 267
31. अमरावती स्कल्पजर्स इन दी मद्रास गवर्नमेंट म्यूजियम मद्रास, पृ० 126
32. अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 2
33. अर्थशास्त्र पर गणपति शास्त्री की टीका
34. यशस्तिलकचम्पू एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ० 214-215
35. अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 18
36. रामायण, युद्धकाण्ड 3.13
37. दी आर्ट ऑफ वार इन एन्शिएण्ट इण्डिया, पृ० 172

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com